मेंढकों का सफाया उनके व्यापार ने किया है

मेंढकों पर मंडराता विश्व व्यापी खतरा आजकल चिंता का विषय बना हुआ है। दरअसल, खतरा सिर्फ मेंढकों पर नहीं वरन समस्त उभयचर जीवों पर मंडरा रहा है। यह खतरा एक घातक फफूंद के फैलने से पैदा हुआ है। और एक ताज़ा अध्ययन बताता है कि इस खतरे को बढ़ाने में व्यापार की अहम भूमिका हो सकती है।

इम्पीरियल कॉलेज, लंदन के रिस फेरर और उनके सहकर्मियों ने इस फफूंद *बैट्रेकोकाइट्रियम डेंड्रोबेटिडिस* (बीडी) के 20 नमूनों का डीएनए विश्लेषण किया। ये नमूने युरोप, अफ्रीका, उत्तरी व दक्षिणी अमरीका तथा ऑस्ट्रेलिया से प्राप्त किए गए थे।

उन्होंने पाया कि 20 में से 16 नमूने जिनेटिक रूप से एक जैसे थे। ये सभी फफूंद की एक ही किस्म (बीडीजीपीएल) से आए थे। यानी यह फफूंद इन पांच महाद्वीपों पर फैल चुकी है। मेंढकों के टैडपोल्स पर किए गए परीक्षणों में पता चला कि फफूंद की यह किस्म जानलेवा और संक्रामक है।

बीडीजीपीएल के जीनोम के विश्लेषण से पता चला कि यह तब बना था जब फफूंद की दो अलग-अलग किस्मों का समागम हुआ था। यह क्रिया पिछले करीब 100 सालों के दरम्यान हुई होगी। फफूंद की अलग-अलग किस्मों का समागम एक बिरली घटना है क्योंकि फफूंद खुद तो यहां-वहां जाती नहीं। इसकी सबसे संभव व्याख्या यह है कि बीसवीं सदी में मेंढकों के व्यापार के दौरान जब मेंढकों को दुनिया भर में यहां से वहां ले जाया जाता था, तब फफूंदों की इन अलग-अलग किस्मों को साथ आने का मौका मिला होगा।

शोधकर्ताओं के मुताबिक उभयचरों को बचाने का एकमात्र तरीका यह है कि उनके व्यापार पर प्रतिबंध लगे। कम से कम उन्हें तब तक एक जगह से दूसरी जगह न ले जाया जाए, जब तक कि वे संक्रमण मुक्त साबित न हो जाएं।

जब यह पता चला कि इस फफूंद का प्रसार व्यापार की वजह से हो रहा है तो वर्ल्ड ऑर्गेनाइज़ेशन फॉर एनिमल हेल्थ ने इस रोग की सूचना देना अनिवार्य बना दिया। वैसे मेडागास्कर और दक्षिण पूर्व एशिया में अभी भी संक्रमण-मुक्त उभयचर प्रजातियां फल-फूल रही हैं। ये दोनों स्थान उभयचर जैव विविधता के हॉट स्पॉट हैं। शोधकर्ताओं को लगता है कि कम से कम इन दो स्थानों को तो व्यापार के ज़रिए फैलने वाले संक्रमण से बचाया जाना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***